''मैं हूं''

(8:12-59)

यूहन्ना 8:12-59 में, यीशु ने स्पष्ट किया कि हर व्यक्ति के लिए यह फैसला लेना आवश्यक है कि वह (यीशु) सचमुच परमेश्वर का पुत्र है या नहीं। यीशु का संदेश स्पष्ट है, और उसके दावों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। हम में से हर एक को या तो खुशी से ''हां!'' कहना पड़ेगा या विद्रोही होकर ''नहीं!''

''मैं हूं'' वाक्यांश

यूहन्ना 8:12 में यीशु ने ऐलान किया, ''जगत की ज्योति मैं हूं।'' यद्यपि आधुनिक पाठक उसके कथन के ''जगत की ज्योति'' भाग पर ध्यान केन्द्रित करना चाहेंगे, परन्तु जिस अतिमहत्वपूर्ण पहलू की यीशु बात कर रहा था वह अन्तिम दो शब्दों अर्थात ''मैं हूं'' में मिलता है। इस छोटे से वाक्यांश का पुराने नियम में बहुत महत्व है; और यीशु के पहली शताब्दी के सुनने वालों के लिए शायद यह सबसे अधिक विवादपूर्ण था। उन्हें ऐसा लगता था जैसे वह कह रहा हो, ''मैं परमेश्वर हूं।'' यूहन्ना रचित सुसमाचार के संदर्भ में, वह *यही* बात कह रहा था!

पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने आपको ''मैं हूं'' कहकर ही बात की थी। जब जलती हुई झाड़ी में परमेश्वर मूसा से मिला था, तो मूसा ने उसका नाम पूछा था। उसे बताया गया था, ''मैं जो हूं सो हूं'' (निर्गमन 3:14)। बाद में, मूसा के गीत में, परमेश्वर ने ऐलान किया था:

> अब तुम देख लो कि मैं ही वह हूं,
> और मेरे संग कोई देवता नहीं;
> मैं ही मार डालता, और मैं जिलाता भी हूं; ...
> (व्यवस्थाविवरण 32:39)।

सदियों बाद, भविष्यवक्ता यशायाह ने लिखा था:

> यहोवा की वाणी है
> कि तुम मेरे साक्षी हो और मेरे दास हो,

जिन्हें मैंने इसलिए चुना है कि समझकर मेरी प्रतीति करो
और यह जान लो कि मैं वही हूं।
मुझ से पहिले कोई ईश्वर न हुआ
और न मेरे बाद कोई होगा
(यशायाह 43:10)।

इस तरह, ''मैं हूं'' पवित्र भाषा थी और इसे परमेश्वर के सिवाय किसी और के लिए इस्तेमाल करना परमेश्वर के नाम की निन्दा भी था!

यीशु कहता है, ''मैं हूं''

यूहन्ना 8 अध्याय की कहानी में यीशु ने अपने लिए दो शब्दों ''मैं हूं'' (यू. *ego eimi*) का इस्तेमाल किया:

जगत की ज्योति मैं हूं (8:12)।

मैं आप अपनी गवाही देता हूं (8:18)।

मैं ऊपर का हूं (8:23)।

मैं संसार का नहीं (8:23)।

जितनी बार उसने इस भाषा का इस्तेमाल किया, उसके सुनने वाले चौंक गए होंगे। अपने आपको परमेश्वर कहे बिना यीशु ईश्वरीय होने की भाषा का इस्तेमाल कर रहा था। यदि यीशु ने इसके आगे कुछ न कहा होता, तो हम इसी आश्चर्य में रहते कि ऐसी भाषा का इस्तेमाल करने का क्या औचित्य था। निश्चय ही हमें हैरान होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यीशु ने अपने दावों को स्पष्ट कर दिया।

अध्याय 3 में यीशु ने यहूदी अगुओं से अपने वार्तालाप में तीन बार, दो भड़काने वाले शब्दों ''मैं हूं'' का इस्तेमाल किया। हमारी तरह ही, उस समय के लोग भी जानते थे कि यीशु अपने आपको परमेश्वर का पुत्र होने की घोषणा कर रहा है: ''इसलिए मैं ने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही [*ego eimi*] हूं, तो अपने पापों में मरोगे''(8:24)।

इससे उलझन पैदा हो गई और यहूदियों ने यीशु से फिर पूछा ''तू कौन है ?'' (8:25)। उसने उत्तर दिया, ''जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही [*ego eimi*] हूं, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूं'' (8:28)।

वार्तालाप को आगे लिखना जारी रखते हुए यूहन्ना ने संकेत दिया कि यीशु उन यहूदियों

से बात कर रहा था ''जिन्होंने उसकी प्रतीति की थी'' (8:31)! वे यह ज़ोर देकर कहते थे कि वे इब्राहीम की संतान हैं, क्योंकि वे कभी गुलाम नहीं हुए थे, इसलिए उन्हें स्वतन्त्रता की यीशु की पेशकश की आवश्यकता नहीं थी। जब यीशु ने उन पर अपनी हत्या की कोशिश करने का आरोप लगाया तो उन्होंने दावा किया कि उसमें दुष्ट आत्मा है (8:48)। उन्होंने और भी विरोधी होकर फिर से दावा किया कि वे इब्राहीम की संतान हैं। यीशु का उत्तर था कि इब्राहीम तो यीशु के दिन को देखकर आनन्दित हुआ था। वे चकित थे कि ऐसा कैसे हो सकता है, क्योंकि इब्राहीम को मरे तो सदियां बीत चुकी थीं। यीशु ने उत्तर दिया, ''मैं तुम से सच कहता हूं; कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं [*ego eimi*]''(8:58)।

अब वे और सहन नहीं कर सकते थे! उन्होंने लैव्यव्यवस्था 24:16 को ध्यान में रखते हुए, पत्थर उठा लिए और उस पर पथराव करने की योजना बना ली। पर यीशु उनमें से निकल कर मन्दिर से चला गया। हर कोई इस बात के महत्व को समझता था कि यीशु ने अभी-अभी क्या कहा था अर्थात उन्हें इस बात की समझ थी कि उसने परमेश्वर के साथ होने, परमेश्वर का पुत्र होने अर्थात परमेश्वर होने का दावा किया था!

आज यीशु के दावे

आज हमें यीशु को क्या समझना चाहिए? बहुत से लोग यह मानने को तो तैयार हैं कि यीशु इस संसार में रहा और वह एक भला मनुष्य था, परन्तु यह मानने को तैयार नहीं हैं कि वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र है। यीशु ने ऐसे विचार को बेतुका बना दिया। उसने केवल एक भला व्यक्ति होने का नहीं बल्कि ''मैं हूं'' होने का दावा किया। उसने अपने आपको एक महान दार्शनिक के रूप में प्रस्तुत नहीं किया; उसने तो अपने आपको पिता के पास जाने के एकमात्र मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया। उसने यह नहीं कहा कि उसे परमेश्वर का विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ है बल्कि उसने तो दावा किया कि वह और पिता एक हैं। उसके स्पष्ट दावे हमें विश्वास करने, मानना चुनने या उसकी सच्ची पहचान को नकारने के लिए विवश करते हैं। इस बात में भयभीत यहूदी अगुवे जिनके हाथों में पत्थर थे आज के उन अविश्वासियों से जो यीशु को एक ''भला मनुष्य'' कहते हैं, अधिक समझ रखते थे कि यीशु के कहने का क्या अर्थ है।

इस सम्बन्ध में जोश मैक्डॉवेल ने लिखा है:

> यीशु के लिए यह बात बहुत महत्व की थी कि पुरुष और स्त्रियां उसे क्या मानते थे। वह बात कहने से जो यीशु ने कही थी और वह दावा करने से जो उसने अपने विषय में किया था, कोई यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकता कि वह केवल एक भला व्यक्ति या भविष्यवक्ता ही था। उसे मनुष्य कहना कोई विकल्प नहीं है, और यीशु ने कभी ऐसा नहीं चाहा था।[1]

कई वर्ष पूर्व, सी. एस. लूइस ने ऐसा ही निष्कर्ष निकाला था:

मैं यहां उसके विषय में लोगों की यह सचमुच मूर्खतापूर्ण बात को कि ''मैं यीशु को एक महान गुरु के रूप में तो मानता हूं, पर मैं परमेश्वर होने के उसके दावे को नहीं मानता'' रोकने की कोशिश कर रहा हूं। हमें ऐसी बात नहीं करनी चाहिए। केवल मनुष्य होने वाला और वैसी ही बातें हो जो यीशु ने कहीं करने वाला व्यक्ति कोई महान गुरु नहीं होगा। वह या तो पागल होगा अर्थात उस व्यक्ति जैसा होगा जो कहता है कि वह पिचपिचा अंडा है या नरक का शैतान। आपको अपनी पसन्द चुननी है। या तो यह व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र था और है: या कोई पागल या उससे भी बुरा। मूर्ख है तो आप उसे चुप करा सकते हैं, दुष्टात्मा है तो आप उस पर थूक सकते हैं और उसे मार सकते हैं; या आप उसके कदमों में गिरकर उसे प्रभु और परमेश्वर कहकर पुकार सकते हैं। परन्तु उसे एक महान गुरु होने का कोई मूर्खतापूर्ण ठप्पा न लगाएं। यह फैसला करना उसने हम पर नहीं छोड़ा है। उसकी इच्छा गुरु बनने की नहीं थी।[2]

शायद अपने लिए यीशु के स्पष्ट दावों के अर्थों को होमेर हेली ने सबसे अच्छी तरह संक्षेप में व्यक्त किया है: ''यदि वह वह नहीं था जो होने का उसने दावा किया था, तो वह एक धोखेबाज, परमेश्वर का निन्दक, कपटी, पाखंडी, और झूठा था।''[3]

सारांश

आज इस सबका हमारे लिए क्या अर्थ है? पहले तो, उनके लिए जिनका पालन-पोषण मसीही विश्वास में हुआ है, यह हमें अपने आत्मिक विकास कि ''यीशु एक भला मनुष्य था'' के चरण से आगे चलने को बाध्य करता है। अपने बच्चों के बड़े होने के साथ-साथ, मैं चाहता हूं कि वे बचपन से ही बच्चों और दुखी लोगों के प्रति यीशु की दयालुता और कोमलता से प्रभावित हो जाएं। यीशु की ऐसी तस्वीर मन में रखना अच्छी बात है। परन्तु यदि मेरे बच्चों के दिमाग़ में यीशु की यह तस्वीर बड़ी नहीं होती अर्थात यदि उन्हें कभी समझ न आए कि यीशु केवल कोमल ही नहीं बल्कि कठोर और मांग करने वाला ही था, तो उनका विश्वास कभी बढ़ नहीं सकेगा। यीशु ने ''मैं हूं'' होने का दावा किया। पुरानी कहावत सच होती है कि ''या तो यीशु सबका प्रभु है, या फिर वह प्रभु है ही नहीं!''

यूहन्ना 8 अध्याय में सोने वाले, उदासीन मसीही से मिलना मुंह पर एक ठण्डे थप्पड़ की तरह लगता है। क्या वह वही है जो वह कहता है कि वह है। यदि वह वह नहीं है, फिर हम क्यों ''कलीसिया बने हुए'' हैं? यदि वह वही है, तो फिर हमारा जीवन और काम वैसा क्यों नहीं है जैसे प्रभु यीशु से बढ़कर हमारे लिए कोई बात न हो?

आराधना सभाओं में आराधना करने वाले पुरुष या महिलाएं यदि सोमवार से शनिवार तक एक मसीही की तरह जीवन नहीं बिताते, तो यीशु के साथ यह मुलाकात उन्हें कोई फैसला लेने के लिए कहती है। हम में से हर एक को या तो विश्वास के या अविश्वास के पक्ष में खड़े होना पड़ेगा।

आप यीशु को क्या मानते हैं? क्या वह एक धोखेबाज़ था? क्या वह झूठा था? क्या वह

पागल था ? क्या वह प्रभु है ? आपको फैसला लेना ही पड़ेगा!

पाद टिप्पणियां

[1]जोश मैक्डॉवल, *मोर दैन ए कारपेन्टर* (व्हीटन,III.: लिविंग बुक्स, 1977), 25. [2]सी. एस. लूइस, *मियर क्रिश्चियेनिटी* (न्यूयॉर्क: मैक्मिलन कं. 1943), 55-56. [3]होमेर हेली *दैट यू मे बिलीव* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1973), 25.